A Pratibha Spandan's Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

नाद से निर्गुण तक: रविदासीय चेतना का गुरुग्रंथ और संगीत में आध्यात्मिक अनुवाद

KM. ALKA[1], PROF. SANGEETA PANDIT[2]

1 Research scholar of Banaras Hindu University, Arts Faculty, Bhojpuri Adhyayan Kendra
2 Dean, Hod, dept. of Vocal Music, Faculty of Performing Arts, Banaras Hindu University

OPEN ACCESS

सारांश

"नाद से निर्गुण तक" शीर्षक के अंतर्गत प्रस्तुत यह शोध संत रविदास की भक्ति चेतना, गुरु ग्रंथ साहिब में उसकी उपस्थिति तथा संगीत के माध्यम से उसके आध्यात्मिक अनुवाद का त्रिस्तरीय अध्ययन है। संत रविदास की वाणी में निर्गुण भक्ति की जो धारा प्रवाहित होती है, वह केवल सामाजिक समानता और आध्यात्मिक समता की घोषणा नहीं करती, बल्कि 'नाद' अर्थात ध्वनि और संगीत को आत्मानुभूति के साधन के रूप में प्रस्तुत करती है। यह शोध इस बात की पड़ताल करता है कि किस प्रकार रविदास की वाणियाँ, जो गुरु ग्रंथ साहिब में विभिन्न रागों के अंतर्गत संगृहीत हैं, केवल वाचिक या पठन योग्य ग्रंथ नहीं हैं, बल्कि वे एक जीवंत संगीतात्मक अनुभव की भूमि भी निर्मित करती हैं। जिसमें नाद के माध्यम से साधक 'निर्गुण' ब्रह्म की अनुभूति की ओर अग्रसर होता है। रविदासीय वाणी की आत्मा, उसकी भाषा की सहजता और उसमें छिपी गूढ़ अनुभूति को जब रागों के साथ जोड़ा जाता है, तो वह साधारण पाठ से ऊपर उठकर एक श्रव्य ध्यान (शबद-साधना) का माध्यम बन जाती है। इस शोध में रविदास की चुनी हुई वाणियों का सांगीतिक विश्लेषण, उनके आध्यात्मिक भावार्थ और सामाजिक चेतना पर प्रभाव का परीक्षण किया गया है। साथ ही यह शोध यह भी स्पष्ट करता है कि संगीत, विशेषकर भारतीय भक्ति परंपरा में, केवल सौंदर्य का नहीं बल्कि मुक्ति का साधन रहा है।

बीज शब्द *- नाद ,भक्ति संगीत ,संत रविदास, आदि गुरु ग्रंथसाहिब ।*

प्रस्तावना

रविदासीय परंपरा भारतीय भक्ति आंदोलन का एक जीवंत आयाम है, जो न केवल सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना को प्रभावित करता है, बल्कि आध्यात्मिकता के उस शुद्ध स्वरूप की भी प्रतिष्ठा करता है जिसमें "निर्गुण" का साक्षात्कार नाद (ध्वनि) के माध्यम से संभव होता है। यह शोध उस प्रक्रिया की पड़ताल करेगा जिसमें संत रविदास की वाणी, गुरुग्रंथ साहिब में संकलित होकर, एक आध्यात्मिक ऊर्जा का माध्यम बनती है, और कैसे वह नाद—गायन, राग और भक्ति संगीत के स्वरूप में—एक अनुभूति की शक्ल लेती है।

अनुसंधान की पद्धति

- **ग्रंथात्मक विश्लेषण:** गुरुग्रंथ साहिब में संत रविदास की वाणियों का सांस्कृतिक, दार्शनिक और भाषिक विश्लेषण।
- **संगीतात्मक अनुशीलन:** शास्त्रीय और लोक संगीत परंपरा में संत रविदास के पदों की प्रस्तुति का अध्ययन।
- **तुलनात्मक दृष्टिकोण:** कबीर, नामदेव, मीरा जैसे अन्य संतों की वाणियों की तुलना में रविदासीय नाद और निर्गुण तत्व का स्थान।

नाद से निर्गुण तक

आहतोऽनाहतश्चेति द्विधा नादो निगद्यते। सोऽयं प्रकाशते पिण्डे तस्मात्पिण्डोऽभिधीयते ॥ ३ ॥[1]

अर्थात- आहत और अनाहत दो प्रकार के नाद कहा जाता है यह (नाद) शरीर में प्रकाशित होता है इसलिए **पिण्डः अभिधीयते** शरीर कहा जाता है। सांगीतिक ध्वनि ही नाद संज्ञा से अभिहित है। भारतीय संगीत परंपरा में यह दो नाद की चर्चा प्रायः प्राप्त होती है। संगीतोपयोगी नाद जिसे आहत नाद कहते हैं। तथा अनाहत नाद को सदैव से योगिगम्य माना जाता है, संत परंपरा में यह योग और भक्ति का आंतरिक अनुभव है।

1 संगीतरत्नाकर प्रथम खंड, प्रथम अध्याय, चौधरी सुभद्रा, राधा पब्लिकेशन्स पृ0 सं0 20

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

निर्गुण

वह परमात्मा जो **रूप, रंग, नाम, गुण** से परे है- निराकार और असीम। भक्ति परंपरा में विशेष रूप से **संत रैदास** (रविदास) जैसे संतों की वाणी में 'निर्गुण' ब्रह्म की उपासना का विशेष स्थान है। जैसा कि हम जानते हैं, संतों की परंपरा सगुण और निर्गुण धारा में प्रवाहमान रहा है किसी ने श्रीहरि की मधुर मनोहर, कठिन-कठोर, भव्य-भयंकर स्वरूप के अवतार को पूजा है तो किसी ने निर्गुण निराकार स्वरूप को मन ही मन आराधा है। निर्गुण काव्यधारा के अनूठे संतों में रविदास, कबीर, नानक, दादू, गरीबदास दयाबाई, सहजोबाई सदना आदि का नाम अग्रणीय है यद्यपि इन संतों को पैदा हुए कई वर्ष बीतने को हैं फिर भी वर्तमान समय में भी इनके पदों,भजनों द्वारा प्राप्त संदेश की प्रसंगिकता क्षीण नहीं हुई है

भक्ति आंदोलन भारतीय सांस्कृतिक और धार्मिक चेतना का वह महत्वपूर्ण अध्याय है, जिसमें संतों ने सामाजिक विषमताओं के विरुद्ध खड़े होकर ईश्वर के प्रति निष्कलुष प्रेम और समर्पण को माध्यम बनाया। इस आंदोलन में संत कवियों की वाणी ने जन-जन को प्रभावित किया, और इसमें संगीत का माध्यम विशेष रूप से प्रभावशाली सिद्ध हुआ। संगीत ने न केवल भक्तों के भावों को अभिव्यक्त करने का कार्य किया, बल्कि वह समाज के उपेक्षित वर्गों तक आध्यात्मिक अनुभूतियों को पहुँचाने का सशक्त उपकरण भी बना। इसी सांगीतिक भक्ति परंपरा में संत रविदास का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे न केवल एक सामाजिक चेतना के वाहक थे, बल्कि एक ऐसे संत कवि भी थे जिनकी वाणी में संगीत की मधुर लय और आध्यात्मिक ऊँचाई का अद्वितीय समन्वय मिलता है। सामाजिक दृष्टि से वे उस वर्ग से संबंधित थे जिसे शास्त्रीय व्यवस्था में 'अस्पृश्य' समझा जाता था। किन्तु ईश्वर भक्ति के क्षेत्र में रविदास ने जो ऊँचाई प्राप्त की, वह केवल आध्यात्मिक नहीं बल्कि सांगीतिक भी थी। उनके भजन और पद न केवल आध्यात्मिक गहराई से ओत-प्रोत हैं, बल्कि उनमें एक विशिष्ट लयात्मकता और गायन की प्रवृत्ति भी दिखाई देती है। उनकी रचनाओं का प्रमुख उद्देश्य आत्मा को परमात्मा से जोड़ना रहा है, और यह कार्य उन्होंने संगीत के माध्यम से प्रभावी ढंग से किया।

भक्ति की सांगीतिक परंपरा में संगीत को केवल मनोरंजन का साधन नहीं माना गया, बल्कि उसे साधना, साक्षात्कार और संप्रेषण का माध्यम माना गया। इस परंपरा में राग, ताल, लय, और स्वर इन सभी का आध्यात्मिक उपयोग हुआ है। संत रविदास ने भी अपनी वाणी को संगीतात्मकता प्रदान करते हुए उसे जन-जन तक पहुँचाया। उनकी रचनाएँ सरल भाषा में, लेकिन गेय शैली में "संत रविदास की वाणी की प्रस्तुति हमेशा से संगीत के माध्यम से होती रही है; खंजरी, मृदंग और इकतारा उनके अनुयायियों के भक्ति गायन में प्रमुख रहे हैं"[1] के साथ प्रस्तुत किया। यह शैली लोकभाषा और लोकधुनों पर आधारित रही, जिससे उनकी रचनाओं की पहुँच ग्रामीण और निम्नवर्गीय समाज तक सहज रूप से हो सकी। "रविदास की रचनाएं सुर और ताल की दृष्टि से इतनी संतुलित हैं कि उन्हें बिना किसी अतिरिक्त रचना के सीधे मंच पर गाया जा सकता है।"[2]

गुरु ग्रंथ साहिब में संत रविदास- आदिगुरु ग्रंथ साहिब में संत रविदास के लगभग चालीस पद संगृहीत हैं। इन पदों को विशिष्ट रागों में संयोजित किया गया है, जो यह स्पष्ट करता है कि उनकी वाणी में केवल काव्य ही नहीं, अपितु संगीत की भी समृद्ध उपस्थिति है। राग जैसे मारू, गूजरी, सोरठ आदि में गाए जाने वाले उनके भजन शास्त्रीय संगीत की कसौटी पर भी खरे उतरते हैं।

सिरीरागु

तोही मोही मोही तोही अन्तरू कैसा।
कनक कटिक जल तरंग जैसा।।
जउपै हम न पाप करंता अहे अनन्ता।
पतित पावन नामु कैसे हुँता ।।
तुम्ह जु नाइक आछहु अंतरजामी ।
प्रभु ते जन जानीजे जन ते सुआमी ।।
सरिरू आराधे मोकउ बिचारु देहु ।
रविदास समदल समझावे कोउ ।।

(आदिग्रन्थ- पद 01)

1 रविदासिया धर्म : एक ऐतिहासिक अध्ययन, डॉ सुरिन्दर सिंह, लोकगीत प्रकाशन, जालंधर, 2012 पृष्ठ संख्या . 89
2 संत साहित्य में संगीत: एक विश्लेषण डॉ रामेश्वर लाल यादव, हिंदी साहित्य सम्मलेन, प्रयागराज 2018 पृष्ठ संख्या: p. 93

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

भावार्थ -विश्लेषण – तुझमें और मुझमें कोई अंतर कैसे हो सकता है ? अगर भेद किया भी जाए तो वह स्वर्ण और आभूषण तथा जल और तरंग की भांति ही अंतर है जो अलग होते हुए भी एक हैं। अगर हम मनुष्य सांसारिक प्राणी पाप न करते तो हे ईश्वर !आप पतित पावन का पद धारण कर सकते ? अगर आप स्वयं को स्वामी और हमें दास मानकर भेद करते हैं तो भी संभव नहीं है क्योंकि स्वामी से दास और दास से स्वामी ख्यातिलब्ध होते हैं, एक की अनुपस्थिति दूसरे की सत्ता को खत्म कर देगी स्वामी और दास एक दूसरे पर आश्रित हैं। ऐसे में रविदास कहते हैं कि हे प्रभु जब तक इस शरीर के रूप में उपलब्ध हुँ तब तक आपके ध्यान में,आराधना में मग्न रहूँ। रैदास कहते हैं कि मुझे ऐसे सतगुरु के शरण प्राप्त हो जिससे परम सत्य की ज्ञान जान सकूँ।

इस बात से यह भी सिद्ध होता है कि रविदास की रचनाएँ संगीत की दृष्टि से सुसंयोजित और परिपक्व थीं। उन्होंने रचनात्मकता और आध्यात्मिकता के बीच एक ऐसा सेतु निर्मित किया, जो भारतीय भक्तिकाव्य की मूल आत्मा को उजागर करता है। आगे चलकर "रैदासी समुदाय ने रविदास की रचनाओं पर आधारित एक सामूहिक संगीतमय उपासना परंपरा विकसित की, जहाँ संगीत प्रतिरोध और आध्यात्मिक आत्म-घोषणा का माध्यम बन गया।"[1] रैदासियों ने रविदास की वाणी को न केवल भक्ति, बल्कि सामाजिक जागरूकता और आत्मसम्मान के सशक्त माध्यम के रूप में अपनाया।

संगीत संत रविदास के लिए केवल एक सहायक कला नहीं थी, बल्कि वह एक ऐसा मार्ग था जिससे वे आत्मानुभूति को संप्रेषित कर सकते थे। जब वे गाते थे – "प्रभु जी तुम चंदन हम पानी", तो उसमें केवल काव्य सौंदर्य नहीं होता, बल्कि एक मधुर रागात्मकता होती है जो श्रोता के हृदय में गूंज उत्पन्न करती है। उनका संगीत किसी राजाश्रित दरबारी संगीत की तरह नहीं था, बल्कि वह जनजीवन से निकला हुआ, लोकधर्मी और सहज था। यही कारण है कि उनकी वाणी आज भी दलित और वंचित समाज की चेतना का स्वर बनी हुई है। "रविदास की आध्यात्मिक अभिव्यक्ति ध्वन्यात्मक रूप में निर्मित है — उनके भजन केवल सुने नहीं जाते, बल्कि महसूस किए जाते हैं, जो आत्मिक ऊँचाई का एक मनो-ध्वनिक (psycho-acoustic) क्षेत्र निर्मित करते हैं।"[2] रविदास की वाणी केवल शाब्दिक या बौद्धिक नहीं है, बल्कि उसकी ध्वनि और भावनात्मक प्रभाव श्रोता को एक ऊँचे, आध्यात्मिक अनुभव की ओर ले जाते हैं। संत रविदास की भक्ति रचनाओं में संगीत के विभिन्न तत्व स्पष्ट रूप से विद्यमान हैं। लयबद्धता, छंदबद्धता, और ध्वनि-संवेदनशीलता के साथ-साथ उनकी वाणी में स्वाभाविक गेयता दिखाई देती है। रविदास के पदों की यह गेयता ही उन्हें जनप्रिय बनाती है। "रविदास के पद स्वर-छंद (tonal prosody) का अनुसरण करते हैं, जिनमें अंतर्निहित लय होती है जो ध्रुपद और प्रबंध जैसी शास्त्रीय संरचनाओं से सामंजस्य रखती है, जिससे गहन ध्यानात्मक गायन संभव होता है।"[3] रविदास की कविताओं की संगीतात्मक गहराई और शास्त्रीय गायन परंपरा से उनके संबंध को उजागर करती है। उनकी रचनाओं में प्रयुक्त लोकधुनें उस समय की सांगीतिक परंपरा का प्रतिनिधित्व करती हैं, जिनमें शास्त्रीयता और लोकगीतों का सुंदर समन्वय है। उन्होंने उच्च श्रेणी की संगीत विद्वता का दावा नहीं किया, लेकिन उनकी वाणी में संगीत आत्मा से उत्पन्न होकर आत्मा तक पहुँचता है यही उनकी विशेषता है।

यह भी विचारणीय है कि भक्ति आंदोलन के संतों की रचनाएँ मंदिरों और आश्रमों में ही सीमित नहीं थीं। ये रचनाएँ गाँव-गाँव में, खेतों में, चौपालों में और श्रम करते लोगों के बीच गाई जाती थीं। संत रविदास की वाणी भी इसी तरह की सामाजिक सांस्कृतिक संरचना में विकसित हुई। रविदास की कविता के गेय पाठ (गाकर वाचन) में ही उनके संदेशों का गहन सामाजिक महत्व और अधिक प्रभावशाली हो उठता है — यहाँ राग केवल माध्यम नहीं, बल्कि एक विस्तारक (बढ़ाने वाला) है।"[4] रविदास की वाणी की शक्ति को रेखांकित करता है कि कैसे संगीत के माध्यम से उनका सामाजिक संदेश और भी गहराई से लोगों तक पहुँचता है। उनकी रचनाएँ उन श्रमिकों के होठों पर थीं जिनके पास न तो पुस्तकें थीं, न शास्त्र, और न ही औपचारिक शिक्षा। लेकिन संगीत के माध्यम से उन्होंने ईश्वर को पाया और आत्मशक्ति को पहचाना। इस अर्थ में संत रविदास की भक्ति केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामूहिक और सामाजिक रूप से परिवर्तनकारी भी थी।

1 Dalit Voices through Bhakti Songs, Ananya Vajpeyi, Permanent Black, 2015, पृष्ठ संख्या: p. 56

2 Voices of the Saints: A Study in Bhakti Aesthetics, Prof. Sudhir Kakar, Oxford University Press, 2016 पृष्ठ संख्या: p. 149

3 Music and Bhakti: A Cultural Study, Dr. Kalpana Tiwari, संगीत नाटक अकादमी 2021, पृष्ठ संख्या: p. 174

4 Bhakti And Power: Debating India's Religion of the Heart, John Stratton Hawley & Christian Novetzke, Permanent Black, 2019, पृष्ठ संख्या: p. 221

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

उपसंहार

संत रविदास की वाणी का विश्लेषण करें तो उसमें प्रतीकात्मकता, बिंब योजना, और रागात्मकता का सुंदर मिश्रण मिलता है। उदाहरणस्वरूप, "मन चंगा तो कठौती में गंगा" जैसे पदों में गहन आध्यात्मिक भाव हैं, लेकिन ये ऐसे ढंग से कहे गए हैं कि उन्हें गाना सरल है और भाव ग्रहण करना और भी सरल। यह संगीतात्मकता ही उनके संदेश को दीर्घकाल तक जीवित रखती है। उनकी वाणी में दोहराव, आंत्यानुप्रास, अनुप्रास और तुकांत जैसी काव्यगत विशेषताएँ भी हैं, जो गान की दृष्टि से अत्यंत उपयुक्त मानी जाती हैं।

संदर्भ

संगीतरत्नाकर प्रथम खंड, प्रथम अध्याय, चौधरी सुभद्रा, राधा पब्लिकेशन्स पृ0 सं0 20

रविदासिया धर्म : एक ऐतिहासिक अध्ययन, डॉ सुरिन्दर सिंह, लोकगीत प्रकाशन, जालंधर, 2012 पृष्ठ संख्या . 89

संत साहित्य में संगीत: एक विश्लेषण डॉ रामेश्वर लाल यादव, हिंदी साहित्य सम्मलेन, प्रयागराज 2018 पृष्ठ संख्या: p. 93

Dalit Voices through Bhakti Songs, Ananya Vajpeyi, Permanent Black, 2015, पृष्ठ संख्या: p. 56

Voices of the Saints: A Study in Bhakti Aesthetics, Prof. Sudhir Kakar, Oxford University Press, 2016 पृष्ठ संख्या: p. 149

Music and Bhakti: A Cultural Study, Dr. Kalpana Tiwari, संगीत नाटक अकादमी 2021, पृष्ठ संख्या: p. 174

Bhakti And Power: Debating India's Religion of the Heart, John Stratton Hawley & Christian Novetzke, Permanent Black, 2019, पृष्ठ संख्या: p. 221